टिप्पणी

225hi07

7

घनवाद, अतियथार्थवाद तथा अमूर्त कला

घनवाद चित्रकला एवं मूर्तिकला की एक शैली है जो लगभग 1907 में पेरिस में प्रारम्भ हुई है। 20वीं शती के प्रारम्भ में यह एक बहुत महत्वपूर्ण प्रव त्ति थी। **सेजां** (Cezanne) घनवाद का पुरोगामी नायक था। उसका कहना था कि प्रकृति में प्रत्येक वस्तु को बेलन या गोला ही समझकर उसके साथ व्यवहार किया जाना चाहिए। इस युग के महत्वपूर्ण कलाकारों में **पिकासो,** (Picasso), **ब्रक** (Braque) तथा **लेजे** (Leger) गिने जाते हैं। उन्होंने विशेष रूप से जड़ पदार्थों, प्राकृतिक द श्य तथा रूपचित्रों को अपने चित्रों का विषय बनाया तथा उन कलाचित्रों के प्रेरक बिन्दु छोटे–छोटे अंशों में विभाजित हो गए। कलाकार का उद्देश्य मुख्य रूप से संरचना पर जोर देना था, भावनाओं पर नहीं। उनका उद्देश्य आकार पर जोर देना था— न कि ज्यामितीय आकारों में प्रयुक्त रंगों की गहराई पर। आकार अत्यधिक अमूर्त तथा सामान्य होते गए। 1920 तक कला का यह आन्दोलन समाप्ति पर आ गया।

अतियथार्थवाद एक दूसरा आंदोलन था, जो 1924 में प्रारम्भ हुआ और 1955 तक चला। अतियथार्थवादी कला के कलाकारों ने अचेतन मन की कल्पना को अपनी कला में प्रयुक्त किया। ये कलाकार अपने को नई विचारधारा के प्रतिनिधि मानने लगे। ये नई विचारधारा को मनोविश्लेषण द्वारा प्रभावित मानते थे। दादवादी (Dadaist) विद्रोह के फलस्वरूप इस क्रान्तिकारी आन्दोलन का जन्म हुआ। **जॉर्जिओ डे चिरिकी** (Giorgio de Chirico) तथा **सल्वादर दाली** (Salvador Dali) इस विचारधारा के बहुत प्रसिद्ध कलाकार माने जाते हैं। अमूर्त कला अभिव्यक्ति विहीन कला के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला शब्द है। यह एक ऐसी कला है जिसके माध्यम से समकालीन संसार को वास्तविक रूप में चित्रित करने के लिए कलाकार तैयार नहीं थे। इसका प्रारम्भ 1910 में हुआ।

अमूर्त कला के पुरोगामी कलाकारों में **कांडिस्की** (Kandinsky), **डेलारूने** (Delarunay) तथा **मॉन्ड्रियन** (Mondrian) को गिना जाता है। इन कलाकारों ने अमूर्त विचारों को मूर्त रूप देने के लिए चित्रों के रूप में स्वरूप देने का प्रयास किया क्योंकि वास्तविक रूप में उन्हें दर्शाना सम्भव नहीं था।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद, आप :

- अमूर्त कला, घनवाद तथा अतियर्थाथवाद के विकास का वर्णन कर सकेंगे;

टिप्पणी

मैन विद वायलिन

- कलाकारों के नाम, कला प्रस्तुति का तरीका तथा प्रयुक्त किया गया सामान, विषय वस्तु तथा सूचीकृत चित्रों के नाम जान सकेंगे;
- सूचीकृत चित्रों के शीर्षक बता सकेंगे;
- अमूर्त कला तथा अन्य कलाओं में भेद कर सकेंगे; और
- अन्य कला आंदोलनों से अमूर्त कला, घनवाद तथा अतियथार्थवाद की कला कृतियों की पहचान कर सकेंगे।

7.1 मैन विद वायलिन (Man With Violin)

शीर्षक	:	मैन विद वायलिन (Man with Violin)
माध्यम	:	कैनवास पर तैलीय रंग
समय	:	1912
आकार	:	100 x 73 सें. मी.
कलाकार	:	पब्लो पिकासो (Pablo Picasso)
संकलन	:	फिलाडेलफिया का कला संग्रहालय

सामान्य विवरण

पब्लो पिकासो (Pablo Picasso) का जन्म 1881 में स्पेन के **मालगा शहर** में हुआ था। वह चित्रकार, मूर्तिकार के साथ–साथ म त्तिका शिल्पी भी था। अपने लम्बे जीवन काल में पिकासो ने अमूर्त संरचना के सिद्धान्तों का अनुसरण किया। वह प्रतीकवाद से बहुत प्रभावित था। **नीली काल अवधि** (Blue Period) 1900-1902 के दौरान पेरिस में उसने अपनी शैली ईजाद की। नीले कैनवास पर नीले तथा हरे रंगों के कारण यह नाम दिया गया। पिकासो ने अपनी **गुलाबी काल अवधि** में (1905-07) काफ़ी प्रगति की। इस समय के दौरान उसने मुख्य रूप से अपने चित्रों में गुलाबी रंग का प्रयोग किया। इसके बाद उस पर अफ्रीकन कला का प्रभाव देखा गया। 1915 से उसने अपने **घनवादी समय** का विकास किया जिससे उसे विश्वस्तर पर ख्याति मिली। घनवाद में मूलरूप से त्रि–विमी आकारों के स्थान पर चौरस नमूनों तथा रंगों के द्वारा चित्र बनाए गए। उन चित्रों में रंग एक–दूसरे रंग को आंशिक रूप से ढंक लेते थे। इस प्रकार के आच्छादन से विभिन्न आकार तथा मानवी शरीर या वस्तुओं को आगे–पीछे से एक ही समय में देखा जा सकता है।

मैन विद वायलिन (Man With Violin) चित्र को 1912 में चित्रित किया गया। यह चित्र घनवाद के विश्लेषणात्मक अध्ययन की अच्छी मिसाल है। वस्तुओं को विभिन्न हिस्सों में बांट दिया गया तथा एक ही समय में चित्र में अन्य विचारों को भी दर्शाया गया है। इस युग के अन्य चित्रों की भांति विभिन्न चित्रित आकारों को पहचाना जा सकता है परन्तु सभी आकार घन के रूप में परिवर्तित हो गए हैं। पिकासो ने आकार को एक नए तरीके से प्रयोग किया है। मानव आकृति जो हाथ में वायलिन पकड़े हुए है, उसे विभिन्न ज्यामितीय आकारों में परिवर्तित कर दिया गया है और फिर टुकड़ों में इकट्ठा किया गया है। इस चित्र में जो रंग प्रयुक्त हुए हैं, वे इस युग के प्रतिनिधि ा रंग हैं। भूरे तथा हरे रंगों का मिश्रण एवं रंगत देखते ही बनता है। इस युग में पिकासो के अधिकांश चित्र इसी प्रकार की तकनीक तथा रंगों से चित्रित किए गए हैं। उसके अनुसार यथार्थ की परिभाषा दूसरी ही थी। उसने यथार्थ को अपने तरीके से परिभाषित किया। उसके अनुसार यथार्थ प्रकृति से भी अधिक यथार्थ है। रंगों तथा अन्य साधनों

टिप्पणी

परसिसटेंस ऑफ मेमोरी

के कुशल और असाधारण प्रयोग ने उसे 20वीं शती का सर्वप्रिय कलाकार बना दिया। उसके सर्वोत्तम चित्रों में **गुयेर्निका** कृति है जो स्पेन के ग हयुद्ध पर आधारित है।

पाठगत प्रश्न 7.1

1. **पिकासो** की दो प्रसिद्ध काल अवधियों को बताइए।
2. **पिकासो** की किस शैली ने उसे प्रसिद्धि दी?
3. **मैन विद वायलिन** (Man with Violin) नामक चित्र कब बनाया गया?
4. गुलाबी काल अवधि में कौन–से वर्ष शामिल हैं?
5. **पिकासो** (Picasso) ने **गुयेर्निका** को किस विषय में चित्रित किया है?

7.2 परसिस्टेंस ऑफ मेमोरी (Persistence of Memory)

शीर्षक	:	परसिसटेंस ऑफ मेमोरी (Persistence of Memory)
माध्यम	:	कैनवास पर तैलीय रंग
समय	:	1931
आकार	:	9½" x 13"
कलाकार	:	सलवादोर डाली (Salvador Dali)
संकलन	:	म्यूजियम ऑफ़ मॉडर्न आर्ट, न्यूयार्क

सामान्य विवरण

सलवादोर डाली (Salvador Dali) अति यथार्थवादी युग का सर्वाधिक प्रसिद्ध कलाकार (चित्रकार) है। वह स्पेन का चित्रकार, लेखक तथा फिल्मकार है। उसने अपने चित्रों में अति यथार्थवादी तकनीक का प्रयोग किया। जिस कला की उसने अपने युवा काल में महारत हासिल की थी, उसी का उसने जीवन के आगामी वर्षो में भी प्रयोग किया। चित्र में आकार का थोड़े समय के लिए प्रयोग करने के बाद उसने अपनी कलाकृतियों में बेतुके, अरीतिक एवं विचित्र विषयों एवं वस्तुओं का चित्रण किया।

परसिसटेंस ऑफ मैमोरी (Persistence of Memory 1931) अति यथार्थवादी आन्दोलन का प्रतिनिधि चित्र है। चित्र में असज्जित (बिना पेड़ों के) प्राकृतिक भू–द श्य तथा शान्ति को चित्रित किया गया है। यह चित्र युद्ध के बाद का द श्य प्रस्तुत करता है जिसमें सारे मनुष्यों के मारे जाने के कारण शून्यता व्याप्त है। इस चित्र में जीवन से संबद्ध यदि कुछ भी वस्तुएं हैं, तो वे विलीन और लुप्त होती घड़ियां हैं। **डाली** के इस चित्र में विलीन होती घड़ियां वास्तविक लगती हैं तथा मानव के अशान्त या विक्षुब्ध मन को दर्शाती हैं। यही सब कुछ उसकी अन्य कलाकृतियों में देखने को मिलता है। **डाली** की अपनी शैली शास्त्रीय तथा सुस्पष्ट है परन्तु उसकी विषय–वस्तु उसके स्वप्नों या दुःस्वप्नों से ली गई है। **डाली** की कृतियों में वस्तुओं का समूहीकरण उन्मुक्त ढंग से किया गया है तथा उनका सांकेतिक अर्थ है। ये कोमल घड़ियाँ नई तथा अप्रिय बिम्ब उभारती हैं। चींटियाँ एक–दूसरे के ऊपर चढ़कर रेंगती हैं मानो सड़े–गले खाने के ऊपर से गुजर रही हों। उनके आकार घड़ी की सतह को पूर्ण रूप से ढंकते हुए हीरे–जवाहरातों के गहनों जैसे

टिप्पणी

ब्लैक लाईन्स

लगते हैं। उसके सारे चित्र एक भिन्न प्रकार की चित्रमय भाषा का स जन करते हैं। डाली का कोई भी चित्र वास्तविकता को प्रस्तुत नहीं करता है। उन चित्रों को देखने से ऐसा लगता है मानो कुछ वस्तुओं को छोड़कर सभी कुछ अस्वाभाविक है।

यद्यपि **डाली** अपनी योग्यता एवं कल्पना के आधार पर एक महान कलाकार माना जाता था तथापि उसका काम करने का तरीका अपना ही था जिससे अरीतिक वस्तुओं का चित्रण ऐसा होता था कि वे वस्तुएं दर्शक को अपनी ओर आकर्षित कर ही लेती थीं। उसका प्रस्तुतीकरण का तरीका ऐसा था कि कभी–कभी वह अपने प्रशंसकों को तथा कला आलोचकों को नाराज़ कर देता था। उसका थियेटर से सम्बन्धित सनकी व्यवहार भी उतना ही विशिष्ट है जितना उसकी चित्रकला विषयक ख्याति; जिससे जनता का ध्यान आकर्षित होता था। उसकी म त्यु 1989 में हुई तथा उसने अपने पीछे **विलावेटिन** (Vilabertin) तथा **लॉर्ज हर्लक्यून** (Large Harlequin) जैसी महान एवं प्रख्यात कलाकृतियाँ विरासत में छोड़ीं। उसी प्रकार **स्माल बॉटल ऑफ रम** (Small Bottle of Rum) तथा **हनी इज स्वीटर दैन ब्लड** (Honey is Sweeter than Blood) उसकी ख्याति प्राप्त कृतियाँ थीं।

पाठगत प्रश्न 7.2

1. **सलवोदार डाली** की शैली क्या थी?
2. उसने क्या तकनीक अपनाई?
3. **डाली** की अति यथार्थवाद की एक कृति का उदाहरण दीजिए।
4. **परसिसटेंस ऑफ मैमोरी** (Persistence of Memory) नामक चित्र में आपको क्या दिखलाई पड़ता है?

7.3 ब्लैक लाइंस (Black Lines)

शीर्षक	:	ब्लैक लाईन्स (Black Lines)
माध्यम	:	कैन्वास पर तैलीय रंग
समय	:	दिसम्बर 1913
आकार	:	4 फीट 3 इन्च X 4फीट 3¼ इंच
कलाकार	:	वैसिली कांडिंस्की (Wassily Kandinsky)
संकलन	:	सोलोमन आर गुगिन्हम म्युजियम, न्यूयोर्क (SolomonR Guggenheim Museium, New York)

सामान्य विवरण

वैसिली कांडिंस्की (Wassily Kandinsky) का जन्म 1866 में रूस में हुआ। वह अपने समय का प्रसिद्ध चित्रकार तथा कला सिद्धान्तवादी माना जाता था। **कांडिंस्की** अमूर्त कला के जन्मदाताओं में से एक है। उसने अ–साद श्यमूलक कला को तीन मुख्य श्रंखलाओं में बाँटा : i) **प्रभाववाद,** ii) **काम चलाऊ प्रबन्ध,** तथा iii) **संयोजन कला**। उसके

चित्र अमूर्तिकरण तथा ज्यामितीय विचारधारा का मिश्रण थे। उसके चित्रों में **अकंपनीड कॉन्ट्रास्ट** (Accompanied Contrast), **येलो अकंपनीमेंट** (Yellow Accompaniment) तथा **एंग्युलर स्ट्रक्चर** (Angular Structure) नामक चित्र बहुत प्रभावशाली हैं। उसके चित्रों का कलाकारों की आगामी पीढ़ी पर बहुत प्रभाव पड़ा।

ब्लैक लाईन्स (Black Lines) नामक चित्र को **कांडिंस्की** (Kandinsky) ने 1913 में बनाया। जैसा चित्र के शीर्षक से संकेत मिलते हैं, ऐसा लगता है कि रेखाएं भारतीय स्याही द्वारा खींची गई हैं। परन्तु वस्तुतः ये रेखाएं काले रंग से खींची गई हैं। इस संयोजन में व्यवस्थानुसार चित्र के एक विशेष कार्नर में खींची गई रेखाओं से एक भिन्न अर्थ निकलता है। इस युग में बने अन्य चित्रों की भांति उसके चित्रों में सरलता तथा शुद्ध रेखा लेख ऐसे चित्रित किए हैं मानो कंकाल (अस्थिपंजर) में मांस हो ही नहीं। रंगीन धब्बे ऐसे प्रतीत होते हैं मानो उन्हें ब्रशों से नहीं वरन विशालकाय हाथों की उंगलियों द्वारा बनाए गए हों। ये धब्बे चित्र में खींची गई रेखाओं तथा उनके प्रभाव से बहुत मेल खाते हैं। **कांडिंस्की** के लिए रेखाएं, आकार तथा रंगों का अपना अलग ही अर्थ है तथा वे अपने क्षेत्रों में स्वतन्त्र रूप से प्रयोग में आते हैं। उसके अधिकांश चित्रों में खींची गई रेखाएं अपूर्ण हैं तथा ऐसा प्रतीत होता है मानो उनकी अपनी ही जिन्दगी है। अपने जीवन के अन्तिम भाग को उसने पेरिस (Paris) में गुजारा तथा 1944 में उसकी म त्यु हो गई।

पाठगत प्रश्न 7.3

1. **कांडिंस्की** का आधुनिक कला में क्या योगदान है?
2. **कांडिंस्की** की तीन प्रमुख चित्र श्र खलाओं के नाम बताइए।
3. **ब्लैक लाइंस** (Black Lines) को उसने कब बनाया?
4. उसकी कला का माध्यम क्या था?

आपने क्या सीखा

अमूर्त कला की बुनियाद के साथ पश्चिमी कला की एक महत्त्वपूर्ण अवस्था का प्रारम्भ माना जाता है। इसके बाद कला के अन्य आन्दोलन प्रारम्भ हुए तथा कला को समझने में लगातार कई परिवर्तन देखे गए। हमें कला में अमूर्त कला का प्रभाव दिखाई देता है परन्तु उसे यथार्थवाद से जोड़ा नहीं जा सकता। कोई भी कला चित्र जो अ–साद श्यमूलक है, उसे अमूर्त कला कहा जाता है। यद्यपि **अमूर्त कला, घनवाद** तथा **अतियथार्थवाद** का जन्म पश्चिम में हुआ तथापि भारतीय कलाकारों पर इसका प्रभाव कई कला चित्रों में देखने को मिलता है।

वैसिली कांडिस्की, सल्वाडोर डाली तथा **पब्लो पिकासो** ने अपनी कला कृतियों के माध्यम से आने वाली सन्तति को प्रेरणा प्रदान की है। इन नए आन्दोलनों में इन

कलाकारों का योगदान कई स्तर पर रहा है। इसके बावजूद वे व्यक्तिपरक रहे। उनकी शैली अपनी ही रही। उनकी कलाकृतियों पर अपने पूर्वकाल की विचारधारा का प्रभाव पड़ा। कला में घनवाद का जन्म एवं पोषण अमूर्तकला के आधार पर हुआ परन्तु **पिकासो** घनवादी कला का प्रतिनिधि कलाकार बना। उसकी चित्रकला एवं मूर्तिकला अपनी इसी शैली के कारण प्रसिद्ध हुई। उसके कला चित्रों में अलग–अलग स्तर पर उस समय का प्रभाव पड़ा तथा इसी कारण से प्रत्येक समय में चित्रित कृतियां एक–दूसरे से भिन्न हैं। **डाली** अतियथार्थवाद के काल में सबसे प्रसिद्ध कलाकार हुए हैं। उनका जीवन बड़ा मनोरंजक तथा विचित्र रहा। अमूर्त कला का प्रारम्भ **वेजिली कांडिस्की** के चित्रों से माना जाता है।

पाठांत अभ्यास

1. घनवाद पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
2. अतियथार्थवाद में **कांडिंस्की** की कलाकृतियों का क्या योगदान है?
3. **कांडिंस्की** की कलाकृति **ब्लैक लाइंस** (Black Lenes) पर एक अनुच्छेद लिखिए।
4. अमूर्तकला पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
5. **पब्लो पिकासो** के बारे में संक्षेप में लिखिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

7.1 1. नीला, घनवाद
2. घनवाद
3. 1912
4. 1905-07
5. स्पेन का ग ह–युद्ध

7.2 1. अतियथार्थवाद
2. अतियथार्थवादी तकनीक
3. परसिसटेंस ऑफ मेमोरी
4. प्राकृतिक द श्य, विलीन होती घड़ियाँ तथा कला

7.3 1. अमूर्त कलाकृतियाँ
2. प्रभाव, तात्कालिक प्रबन्धन तथा संयोजन
3. 1913
4. कैनवास पर तैलीय रंग